*भारत का विदेश व्यापार : 2012-13**

यह लेख महानिदेशक, वाणिज्य आसूचना और सांख्यिकी द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के आधार पर अप्रैल-मार्च 2012-13 में भारत के पण्य व्यापार की समीक्षा प्रस्तुत करता है। यह अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान अलग-अलग वस्तु-वार तथा दिशा-वार ब्योरों का विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है।

मुख्य बातें

वर्ष 2012-13 में भारत का व्यापार घाटा बढ़ते रहने की वजह से बाह्य क्षेत्र पर दवाब बना रहा। पण्य निर्यात में कमी बनी रही, वहीं आयात वृद्धि में कमी आई. लेकिन, निर्यातों में भारी गिरावट के कारण व्यापार घाटा 2011-12 के 183.4 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 2012-13 में और बढ़ कर 190.9 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया। निर्यातों में यह गिरावट, विनिर्मित वस्तुओं विशेषकर, इंजीनियरी सामान तथा हीरे जवाहरात जैसे श्रम-गहन सामान के निर्यातों में गिरावट के कारण आई। भारत की अंतर्राष्ट्रीय मांग में कमी वैश्विक मांग में कमी के कारण परिलक्षित हुई जिसमें यूरोपीय संघ तथा चीन को निर्यात में काफी कमी होना शामिल है। वैश्विक व्यापार में कमी की दशाओं के कारण भारत के वे नीतिगत प्रयास भी परवान नहीं चढ़ सके जिनमें अन्य उभरते देशों को निर्यात बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया था। वर्ष 2012-13 में भारत के व्यापारिक कार्यनिष्पादन की प्रमुख बातें निम्नानुसार हैं:

- वर्ष 2012-13 में भारत का पण्य निर्यात 300.6 बिलियन अमरीकी डालर का था जो पिछले वर्ष के मुकाबले 1.8 प्रतिशत की गिरावट दर्शाता है, जबकि 2011-12 में इसमें 21.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी और यह 306.0 बिलियन अमरीकी डालर रहा था।
- वस्तुवार अलग-अलग आंकड़े दर्शाते हैं कि 2012-13 में पण्य निर्यात में जो गिरावट आई वह मुख्यतः इंजीनियरी सामान, कपड़ा, हीरे-जवाहरात तथा लोह अयस्क और खनिजों के निर्यात में कमी के कारण आई।
- भारत के निर्यातों में कमी सभी प्रमुख देशों, विशेषकर यूरोपीय संघ, यूएई तथा चीन को निर्यात में कमी या कम वृद्धि की वजह से हुई।
- वर्ष के दौरान आयातों में 0.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह 491.5 बिलियन अमरीकी डालर का हो गया, जबकि 2011-12 में इसमें 32.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी और यह 489.3 बिलियन अमरीकी डालर का रहा था।
- जबकि समग्र आयात वृद्धि 0.4 प्रतिशत रही, तेल आयात में 9.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अन्य घटकों जैसे स्वर्ण तथा गैर-तेल गैर-स्वर्ण आयातों में क्रमशः 4.8 तथा 3.4 प्रतिशत की गिरावट आई।

I. भारत का पण्य व्यापार

निर्यात (अप्रैल-मार्च 2012-13)

वित्तीय वर्ष 2012-13 में भारत के निर्यातों में 1.8 प्रतिशत की गिरावट आई। वैश्विक अनिश्चितताओं तथा कम बाह्य मांग के कारण 2012-13 की पहली छमाही में निर्यातों में प्रत्यक्ष कमी दिखाई दी। लेकिन, दिसंबर 2012 से निर्यात वृद्धि में सकारात्मक बदलाव आया जिसका कारण सभी उभरते बाजारों और विकासशील देशों की व्यापारिक गतिविधियों में मामूली वृद्धि होना तथा 2012-13 के दौरान भारत सरकार (बॉक्स 1) तथा भारतीय रिज़र्व बैंक (चार्ट 1) द्वारा उठाए गए संवर्धनात्मक उपायों का प्रभाव होना था।

लेकिन, वित्तीय वर्ष 2012-13 में, संचयी आधार पर पण्य निर्यात 1.8 प्रतिशत घट कर 300.6 बिलियन अमरीकी डालर हो गया, जबकि वित्तीय वर्ष 2011-12 में यह 306.0 बिलियन अमरीकी डालर (21.8 प्रतिशत) रहा था (सारणी 1)।

वस्तुवार तथा गंतव्यवार निर्यात (अप्रैल-दिसंबर 2012)

अलग-अलग वस्तुवार आंकड़ों से यह पता चलता है कि अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान सभी प्रमुख वस्तु-समूहों में निर्यात कम रहा. विनिर्माण क्षेत्र के भीतर, जो भारत के निर्यातों का लगभग 62 प्रतिशत है, इंजीनियरी सामान, कपड़े तथा कपड़े के उत्पाद तथा हीरे-जवाहरात के निर्यातों में कमी

* आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्त प्रभाग में तैयार किया गया। लेख का पूर्व अंक भारिबैं बुलेटिन अप्रैल 2013 में प्रकाशित किया गया था।

बॉक्स 1 : भारत के निर्यात बढ़ाने के लिए हाल में उठाए गए नीतिगत कदम

वर्ष 2012 में वैश्विक व्यापार की धीमी गति बनी रही और इससे भारत के निर्यातों पर बहुत गंभीर असर पड़ा. वैश्विक मांग में, विशेष रूप से उन्नत देशों में, मांग में कमी को देखते हुए भारत सरकार ने 2012-13 (5 जून और 26 दिसंबर) के दौरान कुछ अतिरिक्त कदम उठाए। दिसंबर 2012 में उठाए गए कदमों में मुख्य रूप से शामिल हैं (i) चयनित रोजगारोन्मुख क्षेत्रों (सभी क्षेत्रों में लघु और मझौले उपक्रमों सहित) के लिए मार्च 2014 के अंत तक ब्याज अनुदान योजना का विस्तार (ii) सार्क क्षेत्र के देशों के लिए एक्जिम बैंक के माध्यम से परियोजना निर्यात हेतु 2 प्रतिशत ब्याज अनुदान की प्रायोगिक योजना लागू करना (iii) बाजार केंद्रित योजना, विशेष बाजार केंद्रित योजना, बाजार सहबद्ध उत्पाद केंद्रित योजना का दायरा बढ़ाना, और (iv) आधार अवधि के बाद जनवरी-मार्च 2013 की अवधि के दौरान यूएसए, यूरोपीय संघ तथा एशियाई देशों को वृद्धिगत आयातों पर प्रोत्साहन। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने 18 अप्रैल 2013 को सेज में निवेशकों की रुचि फिर से बढ़ाने तथा निर्यातों में तेजी लाने के लिए विदेश व्यापार नीति के एक भाग के तौर पर उपायों का एक पैकेज घोषित किया। साथ ही, निर्यात संवर्धन पूंजीगत सामान पर शून्य शुल्क योजना और 3 प्रतिशत ईपीसीजी योजना को मिला कर एक योजना का रूप दे दिया गया जो कुछ शर्तों के अधीन सभी क्षेत्रों के लिए शून्य शुल्क ईपीसीजी योजना होगी। घोषित अन्य उपाय निम्नानुसार हैं:

- पूंजीगत सामान के घरेलू विनिर्माण को बढ़ाने के लिए पूंजीगत सामान के घरेलू स्रोत के लिए निर्यात बाध्यता को 10 प्रतिशत घटा दिया गया। जम्मू और कश्मीर में इकाइयों के लिए ईपीसीजी योजना के अंतर्गत निर्यात बाध्यता को भी कम किया गया।
- आइटीसी (एचएस) के अध्याय 63 (अन्य तैयार कपड़ा सामान, सेट, तथा पुराने वस्त्र-रेग्स) और इंजीनियरी क्षेत्र की मदों को अतिरिक्त विशिष्ट शुल्क के अंतर्गत लाने के लिए ब्याज अनुदान योजना का दायरा और बढ़ाया गया। ये क्षेत्र मई 2013 से मार्च 2014 तक इस योजना के अंतर्गत लाभ उठा सकेंगे.
- बाजार और उत्पाद विशाखीकरण योजनाओं का दायरा बढ़ाया गया। बाजार केंद्रित योजना के अंतर्गत नॉर्वे को तथा विशेष बाजार केंद्रित योजना के अंतर्गत वेनेजुएला को जोड़ा गया. बाजार केंद्रित योजना, विशेष बाजार केंद्रित योजना के अंतर्गत देशों की कुल संख्या क्रमशः 125 और 50 हो गई है।
- उत्पाद केंद्रित योजना के अंतर्गत 126 नए उत्पादों को लाया गया है। ये उत्पाद इंजीनियरी, इलेक्ट्रॉनिक्स, रसायन, औषधि तथा कपड़ा क्षेत्र से हैं।
- बाजार सहबद्ध उत्पाद केंद्रित योजना में 47 नए उत्पादों को शामिल किया गया है जो इंजीनियरी, ऑटो कंपोनेंट्स तथा कपड़ा क्षेत्र से हैं। इस योजना के अंतर्गत दो नए बाजारों के रूप में ब्रुनेई तथा यमन को शामिल किया गया है।
- वृद्धिगत निर्यात प्रोत्साहन योजना का दायरा बढ़ाया गया। यूएसए, यूरोपीय संघ तथा एशिया को किए गए निर्यात के मामले में उपलब्ध इस योजना को वर्ष 2013-14 तक बढ़ाया गया है। भारत सरकार इन बाजारों के अंतर्गत लेटिन अमरीका तथा अफ्रीका के 53 देशों को शामिल करने के लिए सहमत हो गई है।

आई, लेकिन रसायन तथा उससे संबंधित उत्पादों की निर्यात-वृद्धि में गिरावट आई। मुख्यतः यूरोपीय देशों तथा अमरीका में कम मांग की वजह से इंजीनियरी सामान की मांग में 5.0 प्रतिशत की गिरावट आई, जबकि एक वर्ष पहले इसमें 17.6

चार्ट 1 : भारत का पण्य व्यापार

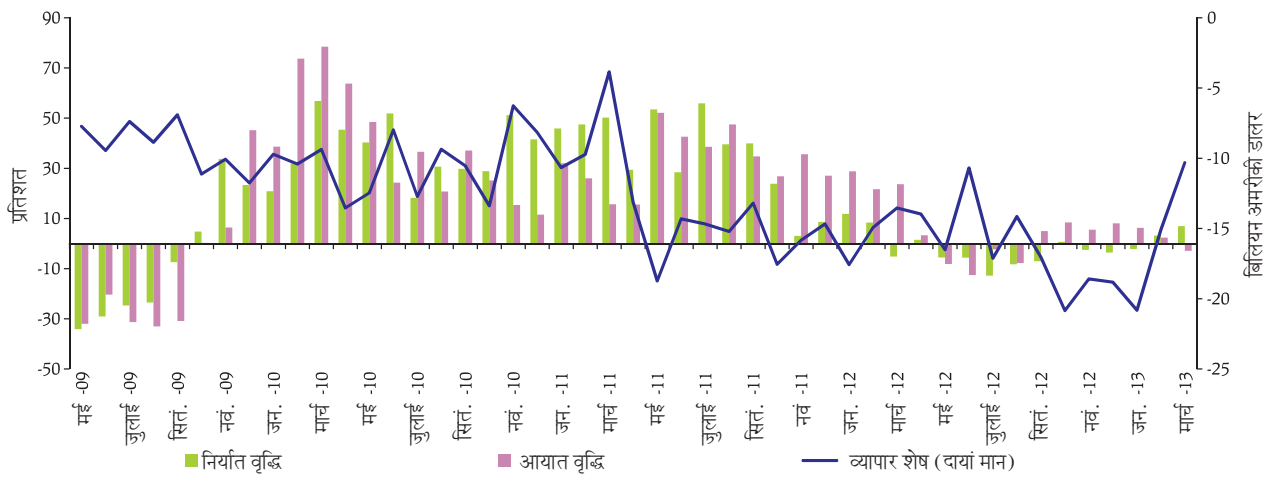

सारणी 1 : भारत का पण्य व्यापार

(बिलियन अमरीकी डालर)

मदें		अप्रैल-मार्च	
		2011-12 (सं)	2012-13 (अ)
1		2	3
निर्यात		306.0 (21.8)	300.6 (-1.8)
जिसमें से :	तेल	56.0 (35.1)	60.0 (7.1)
	गैर-तेल	249.9 (19.2)	240.6 (-3.7)
	स्वर्ण	6.7 (10.8)	6.5 (-3.1)
गैर-तेल गैर-स्वर्ण		243.2 (19.5)	234.1 (-3.8)
आयात		489.3 (32.3)	491.5 (0.4)
जिसमें से : तेल		155.0 (46.2)	169.4 (9.3)
	गैर-तेल	334.4 (26.7)	322.1 (-3.6)
	स्वर्ण	56.5 (39.2)	53.8 (-4.8)
गैर-तेल गैर-स्वर्ण		277.9 (24.5)	268.4 (-3.4)
व्यापार घाटा		-183.4	-190.9
जिसमें से :	तेल	-98.9	-109.4
	गैर-तेल	-84.4	-81.6
गैर-तेल गैर-स्वर्ण		-34.7	-34.4

स्रोत : डीजीसीआइएंडएस

प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। अप्रैल-दिसंबर 2012-13 में, हीरे-जवाहरात तथा हस्तकला जैसे श्रम-गहन क्षेत्रों में क्रमशः 5.5 प्रतिशत तथा 11.2 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि हुई, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में इसमें क्रमशः 30.1 प्रतिशत तथा 23.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

अन्य प्रमुख संवर्गों में, पैट्रोलियम पदार्थों तथा प्राथमिक उत्पादों के निर्यात में अप्रैल-दिसंबर 2011-12 की तुलना में अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान काफी कम वृद्धि हुई (सारणी 2)। प्राथमिक उत्पादों में, लोह-अयस्क के निर्यात में भाड़ा प्रभार बढ़ने, कुछ राज्यों में खनन कार्य पर प्रतिबंध लागू होने, सरकार द्वारा भारी निर्यात शुल्क लगाने तथा रेलवे द्वारा विभेदात्मक भाड़ा वसूली के कारण गिरावट जारी रही। लेकिन, इस वर्ष कुछ छोटे क्षेत्रों में सकारात्मक वृद्धि हुई, जिसमें मुख्य रूप से तंबाखू, प्रसंस्कृत खनिज, धातु तथा गलीचा उत्पाद शामिल हैं।

गंतव्य-वार निर्यात आंकड़ों से यह पता चलता है कि अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान भारत के व्यापार संयोजन में काफी बदलाव आया (सारणी 3)। वर्ष के दौरान यूरोप, यूएस, यूएई तथा चीन जैसे प्रमुख देशों को निर्यात में या तो कमी आई या फिर उसमें कम वृद्धि हुई। चीन को निर्यात में कमी मुख्यतः रुई, लौह-अयस्क, इस्पात तथा पैट्रोलियम उत्पादों के निर्यात में भारी कमी के चलते आई। लेकिन, ईरान, ईराक, सऊदी अरब, रूस तथा कुछ अफ्रीकी देशों को, विशेषकर मिश्र तथा कीनिया को निर्यात में काफी वृद्धि हुई.। सऊदी अरब को निर्यात में 75.5 प्रतशत की भारी वृद्धि हुई

सारणी 2 : भारत का प्रमुख पण्यों का निर्यात

(प्रतिशत)

वस्तु-समूह/अवधि	प्रतिशत हिस्सा				संबंधित भार भिन्नता	
	2011-12	2010-11	2011-12	2012-13	2011-12	2012-13
		अप्रैल-दिसंबर			अप्रैल-दिसंबर	
प्राथमिक उत्पाद	**15.0**	**13.3**	**13.9**	**15.1**	**4.8**	**0.6**
कृषि और संबंधित उत्पाद	12.2	9.4	11.3	13.2	5.2	1.4
अयस्क और खनिज	2.8	3.8	2.7	1.9	-0.4	-0.9
विनिर्मित माल	**60.6**	**63.0**	**60.5**	**61.6**	**15.4**	**-1.4**
चमड़ा तथा सामान	1.6	1.6	1.6	1.7	0.5	-0.01
रसायन और संबंधित उत्पाद	12.1	11.7	12.0	13.5	3.8	1.0
इंजीनियरी सामान	22.2	24.5	22.2	22.0	4.3	-1.1
कपड़ा और कपड़ा उत्पाद	9.2	9.7	9.1	9.0	2.1	-0.5
हीरे-जवाहरात	14.7	14.6	14.7	14.4	4.4	-0.8
पेट्रोल पदार्थ	18.3	16.2	18.7	20.2	8.0	0.7
अन्य	6.1	7.5	6.9	3.1	1.4	-3.9
कुल	**100**	**100**	**100**	**100**	**29.6**	**-4.0**

स्रोत : डीजीसीआइएंडएस से समेकित

सारणी 3 : प्रमुख क्षेत्रों को भारत के निर्यात

(प्रतिशत हिस्सा)

क्षेत्र/देश	2010-11	2011-12	2011-12	2012-13
	अप्रैल-मार्च		अप्रैल-दिसंबर	
1	2	3	4	5
I. ओईसीडी देश	**33.2**	**33.8**	**33.7**	**34.6**
यूरोप	18.3	17.2	17.5	16.8
उत्तरी अमरीका	10.6	12.0	11.9	13
यूएस	10.1	11.4	11.2	12.3
एशिया और ओसेनिया	2.8	3.0	2.6	3
अन्य ओईसीडी देश	1.5	1.6	1.7	1.8
II. ओपेक	**21.3**	**19.0**	**18.5**	**21**
III. पूर्वी यूरोप	**1.1**	**1.1**	**1.1**	**1.3**
IV. विकासशील देश	**38.2**	**40.8**	**40**	**41.5**
एशिया	27.9	29.7	29.1	28.3
सार्क	4.6	4.4	4.2	5
अन्य एशियाई विकासशील देश	23.3	25.3	24.9	23.3
चीन	6.2	6.0	5.8	4.5
अफ्रीका	6.3	6.7	6.5	8.1
लेटिन अमरीका	4.0	4.4	4.4	5.1
V. अन्य / अनिर्दिष्ट	6.2	5.3	6.7	1.6
कुल निर्यात	**100**	**100**	**100**	**100**

स्रोत : डीसीसीआइएंडएस आंकड़ो से समेकित

जो खनिज ईंधन, खनिज तेल तथा उनके सह-उत्पाद खनिज मोम और आर्गेनिक रसायन जैसी मदों की बढ़ती मांग को प्रतिबिंबित करती है।

भारत के कुल व्यापारिक माल के निर्यातों में अप्रैल-दिसंबर 2012 में यूरोपीय संघ और चीन के हिस्से में भारी गिरावट आई। इसके विपरीत, अप्रैल-दिसंबर 2011-12 की तुलना में अप्रैल-दिसंबर 2012 में यूएस तथा यूएई जैसे अन्य महत्वपूर्ण देशों के हिस्से में वृद्धि परिलक्षित हुई। इसी प्रकार, अफ्रीका तथा लेटिन अमरीकी देशों के हिस्से में भी वृद्धि हुई।

देशवार विश्लेषण से यह पता चलता है कि भारत के निर्यातों पर उन देशों का प्रभाव ज्यादा पड़ा, जिनकी वृद्धि में 2012 में गिरावट देखी गई थी। इनमें इंडोनेशिया और मलेशिया शामिल नहीं थे, जहां घरेलू वृद्धि दर लगभग अपरिवर्तित बनी रही (सारणी 4)। इन देशों को निर्यातों में जो कमी आई, वह मुख्यतः पैट्रोलियम उत्पाद, जहाज, नाव तथा तैरने वाले ढांचे (केवल इंडोनेशिया), रसायन और रासायनिक उत्पाद, लोहे और इस्पात की वस्तुओं तथा इलेक्ट्रिकल मशीनों के निर्यात में कमी की वजह से आई। समग्रतः, भारत के निर्यातों में तीन-चौथाई कमी यूरोपीय

सारणी 4 : व्यापार में भागीदार प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि दरें

(प्रतिशत)

अवधि	2011	2012 पहली तिमाही	2012 दूसरी तिमाही	2012- तीसरी तिमाही	2012- चौथी तिमाही	2013- पहली तिमाही
देश						
जापान	-0.6	3.2	4.0	0.4	0.4	0.0
यूरो क्षेत्र	1.4	-0.1	-0.5	-0.7	-0.9	-1.0
यूएस	1.8	2.4	2.1	2.6	1.7	1.8
चीन	9.3	8.1	7.6	7.4	7.9	7.7
हांगकांग	4.9	0.7	0.9	1.5	2.8	2.8
सिंगापुर	5.2	1.5	2.3	0.0	1.5	-0.6
कोरिया	3.6	2.9	2.3	1.5	1.4	1.5
इंडोनेशिया	6.5	6.3	6.3	6.2	6.1	6.0
मलेशिया	5.1	5.1	5.6	5.3	6.5	4.1
ब्राजील	2.7	0.7	0.4	0.9	1.4	ॐ
द. अफ्रीका	3.5	2.4	2.8	2.6	2.3	ॐ

- : अनुपलब्ध

टिप्पणी : वृद्धि दरों को मौसमी रूप से समायोजित किया जाता है (हांगकांग, सिंगापुर तथा मलेसिया को छोड़कर)

स्रोत : ओईसीडी, आइएमएफ सिंग्सटेट डेटाबेस। मासिक सांख्यिकी बुलेटिन बैंक निगारा मलेशिया

संघ तथा विकासशील एशियाई देशों को निर्यातों में कमी के कारण हुई।

आयात (अप्रैल-मार्च 2012-13)

वित्तीय वर्ष 2012-13 में व्यापारिक वस्तुओं के आयात में 0.4 प्रतिशत की सीमांत वृद्धि हुई और यह 491.5 बिलयन अमरीकी डालर पर पहुंच गया, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में 32.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी और यह 489.3 बिलियन अमरीकी डालर रहा था। यह गिरावट मुख्यतः स्वर्ण और गैर-तेल गैर-स्वर्ण आयातों में कमी के कारण आई। गैर-तेल गैर-स्वर्ण आयात में कमी का कारण घरेलू गतिविधियों का धीमापन तथा निर्यात संबंधित मदों की मांग में कमी आना था. वर्ष 2012-13 में कच्चे तेल (भारतीय बॉस्केट) के अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों में सीमांत गिरावट होने के बावजूद, पैट्रोलियम, तेल तथा चिकनाई पदार्थों के आयात में 9.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो पेट्रोलियम उत्पादों के बढ़ते उपभोग का परिचायक है (सारणी 6)।

वस्तुवार तथा देशवार आयात (अप्रैल-दिसंबर 2012)

अप्रैल-दिसंबर 2012 के उपलब्ध आंकड़ों से यह पता चलता है कि आयात की प्रमुख मदों में पेट्रोलियम तथा उससे संबंधित सामान तथा स्वर्ण और चांदी शामिल थे, जिनका भारत के व्यापारिक-पण्य आयात में क्रमशः 34 प्रतिशत तथा 10.8 प्रतिशत हिस्सा था. पेट्रोलियम, तेल

सारणी 5 : भारत के निर्यातों की वृद्धि में क्षेत्रवार सापेक्ष भार भिन्नता

(प्रतिशत)

	2010-11	2011-12	2012-13
	अप्रैल-दिसंबर		
यूरोपीय संघ	4.0	4.9	-1.4
उत्तरी अमरीका	3.2	4.7	0.6
अन्य ओईसीडी	0.6	0.7	0.0
ओपेक	7.1	3.4	1.7
पूर्वी यूरोप	0.5	0.3	0.2
विकासशील एशिया	10.2	9.1	-1.9
अफ्रीका	3.0	1.9	1.2
लेटिन अमरीका	2.3	1.7	0.5
अन्य	6.5	0.8	-5.2
कुल निर्यात	**37.4**	**27.5**	**-4.3**

स्रोत : डीजीसीआइएंडएस आंकड़ों से समेकित

सारणी 6 : कच्चे तेल के मूल्यों की प्रवृत्ति

(अमरीकी डालर/बैरल)

अवधि	दुबई	ब्रेंट	डब्लयुटीआइ*	भारतीय बॉस्केट**
1	2	3	4	5
2005-06	53.4	58.0	59.9	55.7
2006-07	60.9	64.4	64.7	62.5
2007-08	77.3	82.3	82.3	79.2
2008-09	82.1	84.7	85.8	83.6
2009-10	69.6	69.8	70.6	69.8
2010-11	84.2	86.7	83.2	85.1
2011-12	109.4	113.9	96.8	111.9
2012-13	106.9	110.5	92.0	108.0
2012-13 (ति1)	106.2	108.9	93.4	106.9
2012-13 (ति2)	106.2	110.0	92.2	107.4
2012-13 (ति3)	107.2	110.5	88.1	108.3
2012-13 (ति4)	108.0	112.9	94.3	109.6

* वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट

** कच्चे तेल की भारतीय बॉस्केट का संयोजन सोर ग्रेड के लिए ओमान, दुबई और स्वीट ग्रेड के लिए ब्रेंट (दिनांकित) के औसत का प्रतिनिधित्व करता है, जिनका 2012-13 का अनुपात 68.2 : 31.8 है।

स्रोत : अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सांख्यिकी, वर्ल्ड जेम डेटा, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार

तथा चिकनाई पदार्थों के आयात में 12.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो कच्चे तेल के अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों में (भारतीय बॉस्केट) सीमांत गिरावट के कारण इसके आयात में वृद्धि के कारण हुई। वर्ष 2012-13 की पहली छमाही में स्वर्ण की मांग में कमी देखी गई, जो सीमा शुल्क में वृद्धि तथा स्वर्ण की मांग में कमी लाने के लिए भारत सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा उठाए गए अन्य कदमों के कारण आई. लेकिन, नवंबर 2012 से (मार्च 2013 को छोड़कर) स्वर्ण आयात में तेज वृद्धि दिखाई दी. कुल व्यापारिक पण्य आयात के अन्य घटकों में शामिल पूंजीगत सामान के 18.8 प्रतिशत के हिस्से में घरेलू अर्थव्यवस्था में निवेश गतिविधियों के धीमेपन के कारण 7.1 प्रतिशत की गिरावट आई। उक्त अवधि में मोती, कीमती और अर्धकीमती पत्थरों, रसायन, कपड़े का धागा तथा काजू जैसी निर्यात संबंधित मदों के आयात में या तो कमी आई या फिर कम वृद्धि हुई (सारणी 7)।

भारत के आयात के देशवार आंकड़ों से यह पता चलता है कि यूरोपीय संघ, चीन, यूएस, ऑस्ट्रेलिया, हांगकांग तथा सिंगापुर से भारत के आयातों में अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान कमी आई। इसके विपरीत, सऊदी अरब, यूएई, ईराक और कुवैत जैसे मुख्यतः तेल निर्यातक देशों से आयात

सारणी 7 : प्रमुख पण्यों का आयात

(प्रतिशत)

पण्य समूह/अवधि	2011-12	प्रतिशत हिस्सा			सापेक्ष भार भिन्नता	
		2010-11	2011-12	2012-13	2011-12	2012-13
		अप्रैल-दिसंबर			अप्रैल-दिसंबर	
1. पेट्रोलियम, कच्चा तेल और उत्पाद	31.7	27.9	30.5	34.3	13.3	3.8
2. पूंजीगत सामान	20.3	21.7	20.2	18.8	5.7	-1.4
3. सोना-चांदी	12.5	11	12.6	10.8	6.1	-1.8
4. ऑर्गेनिक और इनऑर्गेनिक रसायन	3.9	4.2	3.9	4	1	0.1
5. कोयला, लुगदी और ईंटे	3.6	2.9	3.7	3.3	2.1	-0.4
6. ऊर्वरक	2.4	2.3	2.6	2.1	1.2	-0.5
7. धातु-अयस्क तथा धातु स्क्रेप	2.7	2.7	2.8	3.0	1.1	0.1
8. लोहा और इस्पात	2.5	2.9	2.5	2.3	0.4	-0.2
9. मोती, कीमती और अर्धकीमती पत्थर	5.7	8.4	6.1	4.3	-0.2	-1.8
10. अन्य	14.7	16	15.1	17.1	4.5	2.0
कुल आयात	**100**	**100**	**100**	**100**	**35.2**	**-0.1**

स्रोत : डीजीसीआइएंडएस आंकड़ों से समेकित

सकारात्मक बने रहे। उक्त अवधि में, लेटिन अमरीकी देशों से आयात में वृद्धि 2011-12 की इसी अवधि की तुलना में काफी अधिक रही। उदाहरण के लिए, ब्राजील से आयातों में वृद्धि मुख्यत; चीनी तथा चीनी से निर्मित सामान, जानवर अथवा सब्जियों की वसा तथा तेल से संबंधित मदों के आयात के कारण हुई।

चीन से आयातों में कमी होने के बावजूद, यह मुख्य आयात स्रोत बना रहा, जिसका भारत के व्यापारिक पण्य आयात में 11.3 प्रतिशत हिस्सा था। अन्य प्रमुख आयात स्रोत देशों में यूएई, सऊदी अरब, स्विट्जरलैंड तथा यूएसए थे, जिनका हिस्सा क्रमशः 7.8 प्रतिशत, 6.8 प्रतिशत, 5.5 प्रतिशत तथा 5.1 प्रतिशत था। अप्रैल-दिसंबर 2012 में जहां भारत के कुल आयातों में यूएसए, यूरोपीय संघ तथा स्विट्जरलैंड जैसे देशों के हिस्से में गिरावट आई, वहीं यूएई सहित ओपेक देशों तथा लेटिन अमरीकी देशों के हिस्से में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में वृद्धि दिखाई दी (सारणी 8)।

व्यापार घाटा

आयातों की अपेक्षा निर्यातों में तेज कमी के कारण व्यापार घाटे में वृद्धि हुई, जो 2011-12 के 183.4 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 2012-13 में बढ़ कर 190.9 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। उक्त अवधि में, पेट्रोल, तेल और चिकनाई पदार्थ तथा स्वर्ण दोनों का आयात मिलकर भारत के व्यापरिक पण्य आयात का 45.4 प्रतिशत तथा व्यापारिक पण्य व्यापार घाटे का 117 प्रतिशत था। वर्ष 2012-13 में स्वर्ण के आयात में कमी होने के बावजूद वे अभी भी काफी उच्च स्तर पर थे और भारत के उच्च व्यापार घाटे के लिए चिंता का विषय बने हुए थे।

II. वैश्विक व्यापार की प्रवृत्तियां

वर्ष 2012 में वैश्विक सुधार की गति और धीमी होने के साथ-साथ विश्व व्यापार की वृद्धि में भी गिरावट आई (चार्ट 2)। यूरोपीय संघ तथा अन्य कई प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में वैश्विक आयात मांग में कमी की वजह से उत्पन्न आर्थिक धीमेपन के कारण विश्व व्यापार में मंदी बनी रही। यूरोपीय संघ के देशों की मांग में कमी ने न केवल यूरोपीय संघ के देशों के बीच व्यापार को प्रभावित किया, बल्कि अन्य उन्नत देशों तथा उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के माध्यम से भी प्रभाव डाला। लेकिन, वैश्विक व्यापार चक्र ने, वर्ष

सारणी 8 : भारत के आयातों में समूहों/देशों का हिस्सा

(प्रतिशत हिस्सा)

क्षेत्र/देश	2010-11	2011-12	2011-12	2012-13
	अप्रैल-मार्च		अप्रैल-दिसंबर	
1	2	3	4	5
I. ओईसीडी देश	30.6	30.2	30.4	27.7
यूरोपीय संघ	12.0	11.9	12.0	10.9
फ्रांस	1.0	0.9	0.8	0.8
जर्मनी	3.2	3.3	3.4	3.0
यूके	1.5	1.6	1.6	1.4
उत्तरी अमरीका	6.0	5.6	5.8	5.6
यूएस	5.4	5.0	5.2	5.1
एशिया और ओसियानिया	5.4	5.7	5.7	5.2
अन्य (ओईसीडी देश)	7.2	7.0	6.9	5.9
II. ओपेक	33.6	35.5	34.4	38.6
III. पूर्वी यूरोप	1.5	1.7	1.6	1.9
IV. विकासशील देश	33.0	32.3	33.2	31.5
एशिया	27.1	25.9	26.9	24.6
सार्क	0.6	0.5	0.5	0.6
अन्य एशियाई विकासशील देश	26.5	25.3	26.3	24.0
जिनमें से:				
चीन	11.8	11.8	12.4	11.3
अफ्रीका	3.6	4.0	4.1	3.8
लेटिन अमरीका	2.4	2.4	2.3	3.1
V. अन्य / अविनिर्दिष्ट	1.3	0.3	0.3	0.3
कुल	**100**	**100**	**100**	**100**

स्रोत : डीजीसीआइएंडएस आंकड़ो से समेकित

2012 की अंतिम तिमाही से, कुछ उभरती तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में सुधार के प्रारंभिक संकेत दर्शाए हैं (चार्ट 3)। फिर भी, 2012 में समग्र रूप से विश्व व्यापार की मात्रा में 2.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई, हालांकि यह 2011 की 6.0 प्रतिशत की वृद्धि के मुकाबले कम थी। यह आशा की जाती है कि आगे चल कर व्यापार की स्थिति में कुछ सुधार होगा। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (2013) के अनुसार, 2013 में विश्व व्यापार की मात्रा (वस्तुएं और सेवाएं) में 3.6 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है। इसी प्रकार, विश्व व्यापार संगठन ने 2013 में विश्व पण्य व्यापार की मात्रा में 3.3 प्रतिशत (2012 में 2.2 प्रतिशत) वृद्धि का अनुमान लगाया है। लेकिन, ऐसी भविष्यवाणियां तभी सफल हो सकती हैं जब यूएस तथा यूरोपीय संघ की अपसारी अर्थव्यवस्था से उत्पन्न होने वाले संभावित जोखिमों का सामना न करना पड़े।

चार्ट 4 में उन्नत तथा उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में 2012 के मुकाबले 2013 की पहली तिमाही में अपसारी कार्यनिष्पादन को दर्शाया गया है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में

चार्ट 2 : वैश्विक जीडीपी वृद्धि

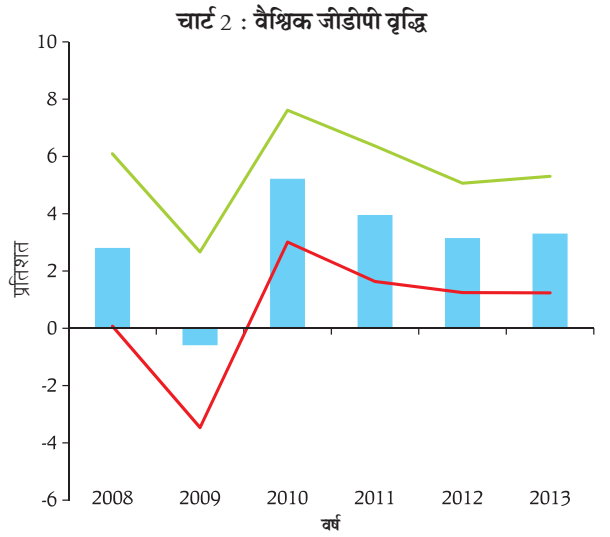

स्रोत : वैश्विक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण, आइएमएफ

धीमी वृद्धि वैश्विक व्यापार विस्तार की कमजोर कड़ी बनी रही, लेकिन उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं ने अंतर-उद्योग तथा पिछड़े देशों के साथ व्यापार वृद्धि के माध्यम से वैश्विक व्यापार में अपना योगदान दिया। जहां उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं ने 2013 की पहली तिमाही में निर्यात वृद्धि की गति बनाए रखी, वहीं पिछली तिमाही की तुलना में उन्नत देशों की निर्यात-वृद्धि की गिरावट अधिक उभर कर सामने आई।

कुछ प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के मजबूत होने के संकेतों के बावजूद फरवरी 2013 के मध्य से अधिकांश औद्योगिक

चार्ट 3 : निर्यात वृद्धि की प्रवृत्तियां

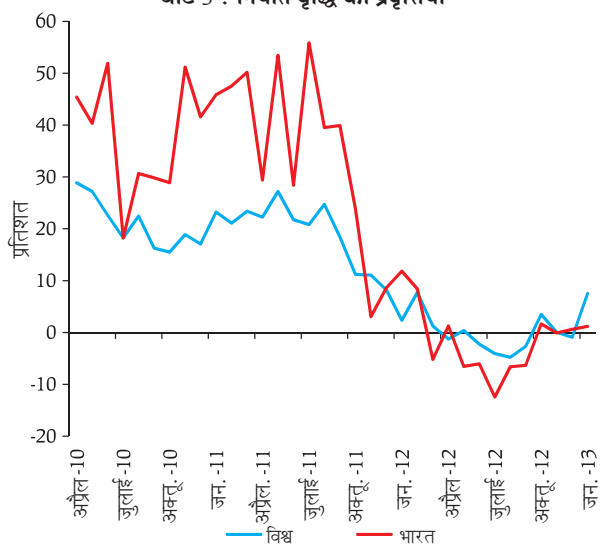

स्रोत - अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सांख्यिकी, आइएमएफ

चार्ट 4 : उन्नत तथा उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में व्यापारिक वस्तुओं के निर्यात की वृद्धि

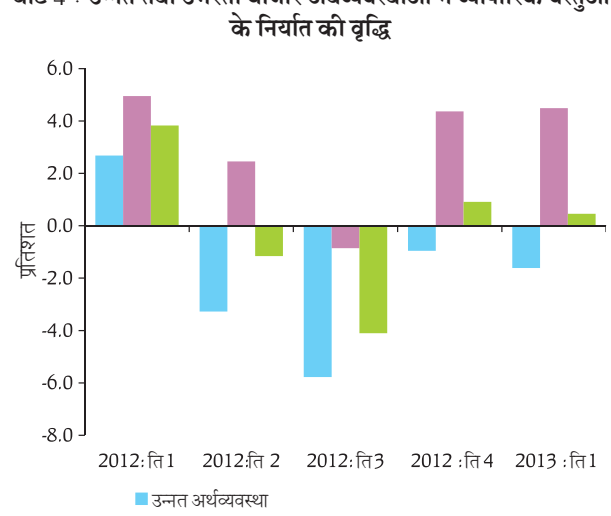

स्रोत - अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सांख्यिकी, आइएमएफ

वस्तुओं के अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों में कमी आई (चार्ट 5)। वर्ष 2013 की पहली तिमाही में कच्चे तेल के अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों में जो कमी हुई, वह उत्तरी समुद्री घाटी से आपूर्ति बढ़ने तथा यूरोपीय तेलशोधक इकाइयों के अपने मौसमी रखरखाव चक्र की ओर बढ़ने से मांग में आई कमी के कारण हुई। इसी प्रकार, आधारभूत धातुओं के बढ़ते मूल्यों में गिरावट हाल के महीनों में बढ़ती मालसूची तथा अधिक आपूर्ति का द्योतक थी। यद्यपि, 2013 की पहली तिमाही में अंतर्राष्ट्रीय खाद्य मूल्यों में मिश्रित प्रवृत्ति रही, तथापि, यूएस के कृषि मंत्रालय द्वारा वैश्विक स्टॉक की आशा से भी बेहतर स्थिति बताने तथा गेहूं के उत्पादन में सुधार की संभावना से हाल के महीनों में अनाज के मूल्यों में कमी आई है।

III. परिदृश्य

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, दिसंबर 2012 से भारत के निर्यातों में सकारात्मक प्रवृत्ति दिखाई देती रही है। लेकिन, सकारात्मक निर्यात वृद्धि की निरंतरता व्यापार में भागीदार अर्थव्यवस्थाओं की मांग और वृद्धि की संभावना पर निर्भर करेगी। विश्व व्यापार की संभावनाओं पर विश्व व्यापार संगठन द्वारा किए गए आंकलन के अनुसार 2013 की पहली तिमाही में, उत्पादन के निर्देशक तथा व्यवसाय भावना, चालू आर्थिक स्थितियों की मिश्रित तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। चूंकि अनुमान यह है कि वैश्विक वृद्धि में सुधार बहुत कम ही होगा तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए मुख्य जोखिम अभी भी मौजूद हैं, अतः भारत के निर्यातों

चार्ट 5 : वैश्विक पण्य मूल्य

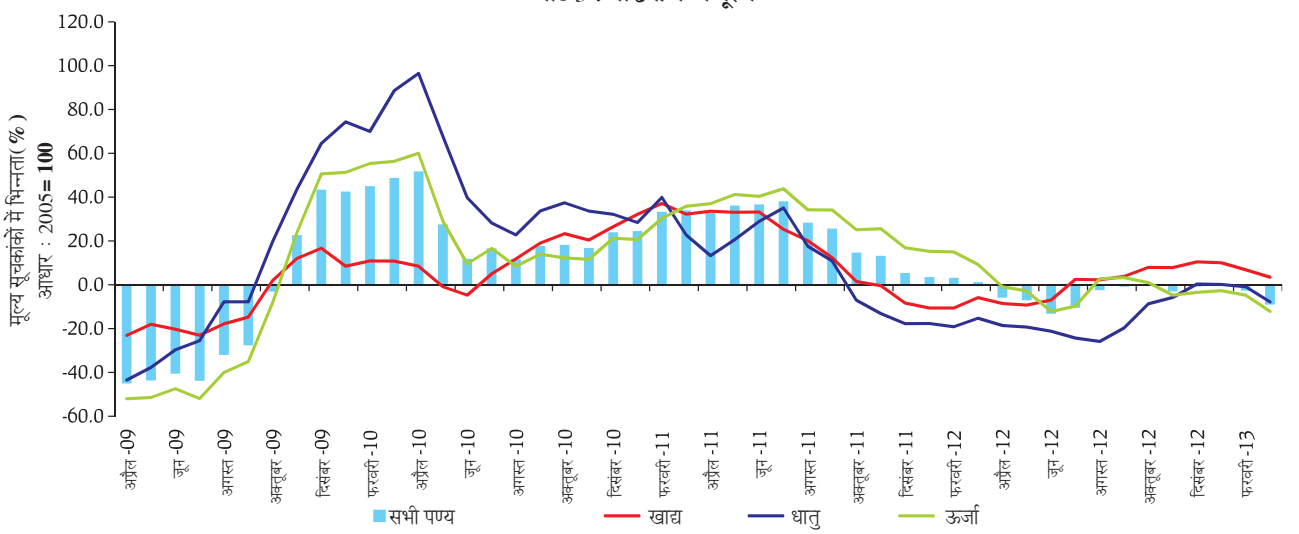

स्रोत - विश्व आर्थिक दृष्टिकोण डाटाबेस, आइएमएफ

में बहुत कम वृद्धि होने का अनुमान है। पैट्रोल, तेल और चिकनाई पदार्थों तथा स्वर्ण के अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों में नरमी की प्रवृत्ति रहने तथा इन दोनों मदों के आयात को कम करने के लिए भारत सरकार और रिज़र्व बैंक द्वारा उठाए गए कदमों से आयात-वृद्धि में कमी आ सकती है। चूंकि वैश्विक सुधार के संकेत बहुत सुनिश्चित नहीं हैं, अतः भारत के निर्यातों में वृद्धि बनाए रखना एक चुनौती होगी और इसके लिए उत्पादकता आधारित प्रतिस्पर्धात्मकता लाने के प्रयास किए जाने होंगे।

वर्ष 2011-12 तथा 2012-13 के लिए व्यापारिक पण्य के निर्यात और आयात संबंधी वस्तुवार तथा देशवार मासिक आंकड़ों की विस्तृत जानकारी http://www.rbi.org.in/scripts/BS- press Release Display.aspx से प्राप्त की जा सकती है।